आपस्तम्ब की शिवभक्ति

आपस्तम्ब एक मुनि थे। वे परम बुद्धिमान् और महायशस्वी थे। उनकी पत्नी का नाम अक्षसूत्रा था, वह पातिव्रत-धर्म का पालन करनेवाली थी। मुनि के एक पुत्र थे, जो 'कर्की' नाम से विख्यात थे। वे बड़े विद्वान् और तत्त्ववेत्ता थे। एक दिन उनके आश्रम पर मुनिश्रेष्ठ अगस्त्य आये। शिष्योंसहित मुनीश्वर आपस्तम्ब ने अगस्त्यजी का पूजन किया और इस प्रकार पूछा-'मुनिवर! तीनों देवताओं में कौन पूज्य है? अनादि और अनन्त कौन है? तथा वेदों में किसका यशोगान किया गया है? महामुने! यही मेरा संशय है, इसे दूर करने के लिये आप कुछ उपदेश करें।'

अगस्त्यजी बोले – धर्म, अर्थ, काम और मोक्षकी सिद्धि में शब्द प्रमाण बतलाया जाता है। उसमें भी वैदिक शब्द सबसे श्रेष्ठ प्रमाण है। वेद के द्वारा जिनका यशोगान होता है, वे परात्पर पुरुष परमात्मा हैं। जो मृत्यु के अधीन होता है, उसे अपर(क्षर पुरुष) जानना चाहिये और जो अमृत है, उसे पर (अक्षर पुरुष) कहते हैं। अमृत के भी दो स्वरूप हैं-मूर्त और अमूर्त। जो अमूर्त(निराकार) है, उसे परब्रह्म जानना चाहिये और मूर्त को अपर ब्रह्म कहते हैं। गुणों की व्यापकता के अनुसार मूर्त के भी तीन भेद हैं-ब्रह्मा, विष्णु और शिव। ये एक होते हुए भी तीन कहलाते हैं। इन तीनों देवताओं का भी वेद्यतत्त्व एक ही है। उसे ही परब्रह्म कहते हैं। गुण और कर्म के भेद से एक की ही अनेक रूपों में अभिव्यक्ति होती है। लोकों का उपकार करने के लिये एक ही ब्रह्म के तीन रूप हो जाते हैं। जो इस परम तत्त्व को जानता है, वही विद्वान् है; दूसरा नहीं। जो इन तीनों में भेद बतलाता है, उसे लिङ्ग भेदी कहते हैं। उसके लिये कोई प्रायश्चित्त नहीं है।[1] तीनों देवताओं के रूप एक दूसरे से भिन्न और पृथक्-पृथक् हैं। सम्पूर्ण साकार रूपों में पृथक्-पृथक् वेद प्रमाण हैं। जो निराकार तत्त्व है, वह एक है। वह उन तीनों की अपेक्षा उत्कृष्ट माना गया है।

आपस्तम्ब बोले – इससे मैं किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सका। इसमें जो रहस्य की बात हो, उसे विचारकर बतलाइये।

अगस्त्य ने कहा – यद्यपि इन देवताओं में परस्पर कोई भेद नहीं है, तथापि सुखस्वरूप शिव से ही सम्पूर्ण सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। मुने! पराभक्ति के साथ भगवान् शिव की ही आराधना करो। दण्डकारण्य में गौतमी के तट पर भगवान् शिव समस्त पापराशि का निवारण करते हैं।

---

1. **लोकानामुपकारार्थमाकृतित्रितयं भवेत्।**
यस्तत्त्वं वेत्ति परमं स च विद्वान्न चेतरः।।
तत्र यो भेदमाचष्टे लिङ्गभेदी स उच्यते।
प्रायश्चित्तं न तस्यारित यश्चैषां व्याहरेद् भिदाम्।। (ब्र. पुराण 130/11-13)

महर्षि अगस्त्य की यह बात सुनकर आपस्तम्ब मुनि को बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने गङ्गा में जाकर स्नान किया और व्रतपालन का नियम लेकर भगवान् शंकर का स्तवन करना आरम्भ किया।

आपस्तम्ब बोले – जो काष्ठों में अग्नि, फूलों में सुगन्ध, बीजों में वृक्ष आदि, पत्थरों में सुवर्ण तथा सम्पूर्ण भूतों में आत्मा रूप से छिपे रहते हैं, उन भगवान् सोमनाथ की मैं शरण लेता हूँ। जिन्होंने खेल-खेल में ही इस विश्व की रचना की, जो तीनों लोकों के भरण-पोषण करनेवाले तथा उनके रचयिता हैं, सम्पूर्ण विश्व जिनका स्वरूप है और जो सत्-असत् से परे हैं, उन भगवान् सोमनाथ की मैं शरण लेता हूँ। जिनका स्मरण करने से देहधारी जीव को दरिद्रता के महान् अभिशाप और रोग आदि स्पर्श नहीं करते तथा जिनकी शरण में गये हुए मनुष्य अपनी अभीष्ट वस्तु को प्राप्त कर लेते हैं, उन भगवान् सोमनाथ की मैं शरण लेता हूँ। जिन्होंने पहले तीनों वेदों में वर्णित धर्म का साक्षात्कार करके उसमें ब्रह्मा आदि देवताओं को नियुक्त किया और इस प्रकार जिन्होंने दो शरीर धारण किये, उन भगवान् सोमनाथ की मैं शरण लेता हूँ। नमस्कार, मन्त्रोच्चारणपूर्वक हवन किया हुआ हविष्य तथा श्रद्धापूर्वक किया हुआ पूजन-ये सब जिनको प्राप्त होते हैं तथा सम्पूर्ण देवता जिनकी दी हुई हवि को ग्रहण करते हैं, उन भगवान् सोमनाथ की मैं शरण लेता हूँ। जिनसे बढ़कर दूसरी कोई उत्तम वस्तु नहीं है, जिनसे बढ़कर अत्यन्त सूक्ष्म भी कोई नहीं है तथा जिनसे बढ़कर महान्-से-महान् वस्तु भी दूसरी नहीं है, उन भगवान् सोमनाथ की मैं शरण लेता हूँ। जिनकी आज्ञा से यह विचित्र, अचिन्त्य, नाना प्रकार का और महान् विश्व एक ही कार्य में संलग्न हो निरन्तर परिचालित रहता है, उन भगवान् सोमनाथ की मैं शरण लेता हूँ। जिनमें ऐश्वर्य, सबका आधिपत्य, कर्तृत्व, दातृत्व, महत्त्व, प्रीति, यश और सौख्य-ये अनादि धर्म हैं, उन भगवान् सोमनाथ की मैं शरण लेता हूँ। जो सदा शरण लेने योग्य, सबके पूजनीय, शरणागत के प्रिय, नित्य कल्याणमय तथा सर्वस्वरूप हैं, उन भगवान् सोमनाथ की मैं शरण लेता हूँ।

इस प्रकार स्तुति करने पर भगवान् शंकर ने प्रसन्न होकर कहा-'मुने! कोई वर माँगो।' आपस्तम्ब ने कहा-'मेरा और दूसरों का कल्याण हो। जो मनुष्य यहाँ स्नान करके सम्पूर्ण जगत् के स्वामी आपका दर्शन करें, वे अपनी समस्त अभीष्ट वस्तुओं को प्राप्त करें।' भगवान् शिव ने 'एवमस्तु' कहकर इसका अनुमोदन किया। तब से वह तीर्थ आपस्तम्ब के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वह अनादि अविद्यामय अन्धकारराशि का उन्मूलन करने में समर्थ है।

(उपर्युक्त कथा गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित संक्षिप्त मार्कण्डेय-ब्रह्मपुराणांक के ब्रह्मपुराण पृ. 444-445 से ली गयी है।)

❀❀❀❀❀❀